आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2650 • उदयपुर, सोमवार 28 मार्च, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

नारायण सेवा की सहभागिता में भव्य आयोजन

ये किसी से नहीं कम, मौका मिला दिखाया दम

पैरा ऑलम्पियन झाझरिया व अर्जुन अवार्डी नागर ने की शुरूआत : पैरालिम्पिक कमेटी ऑफ इंडिया एंव नारायण सेवा संस्थान का महाराणा प्रताप खेलगांव सोसायटी के सहयोग से आयोजित इस चैम्पियनिशप के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि पद्मभूशण एंव पैरा ऑलम्पियन देवेन्द्र झाझरिया ने कहा कि

दिव्यांग खिलाड़ियों को समाज और सरकार द्वारा जो सुविधाएं उपलब्ध कराए जा रही है, उससे निश्चित रूप से दिव्यांगों को हौसला बढा है। उन्होंने पिछले ऑलम्पिक में 19 पदक हासिल कर इस बात को सिद्ध कर दिया है कि शारीरिक असक्षम होने के बावजूद हौसले और उचित प्रशिक्षण उनके विकास में बाधक नहीं हो सकते। विशिश्ट अतिथि ऑलम्पियन अर्जुन अवार्डी कृश्णा नागर, जिला कलक्टर ताराचन्द जी मीणा, एसडीएम गिर्वा सलोनी जी खेमका, राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति एस.एस. सारंगदेवोत जी, ऑलम्पिक कमेटी के तैराकी चैयरमेन डॉ. वी.के. डबास जी थे। अतिथियों ने राश्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ ही आकाश में इंद्रधनुशी रंगों के गुब्बारे उड़ा कर चैम्पियनशिप का शुभारंभ किया। संस्थान संस्थापक चैयरमेन पद्मश्री कैलाश जी मानव एवं संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने अतिथियों , पैरा तैराकों, टीम प्रबंधको को स्वागत किया। राजस्थान की टीम के पिंटू कुमार ने खिलाड़ियों को शपथ दिलाई विंग कमांडर एम.एल.एस. जी प्रसाद, ग्रुप कैप्टन दिनेश जी सूरी एवं निदेश वंदना जी अग्रवाल ने तैराकों की हौसला आफजाई की। संचालन महिम जी जैन ने किया तथा आभार संयोजक रविश जी कावड़िया ने व्यक्त किया।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति
(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

21वीं नेशनल पैरा स्विमिंग चैंपियनशिप

चुनौतियों का रास्ता चुन 38 की उम्र में जीते 2 गोल्ड

38 साल की एक महिला, जो चाहती तो जीवन से हार मान सकती थी, चाहती तो चारदीवारी के अंदर अपना पूरा जीवन गुजार सकती थी..... लेकिन उसने अपने लिए एक अलग रास्ता चुना ..... एक ऐसा रास्ता जो संघर्ष और चुनौतियों से भरा है। इडुक्की (केरल) निवासी सिनी सेबेस्टियन जन्म से बौनेपन का शिकार हैं। पिता की मृत्यु हो जाने से पारिवारिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हैं। बड़े भाई रबर के पेड़ों का दूध निकालकर बेचते हैं जिससे मुश्किल से परिवार का गुजारा हो पाता है। वह अविवाहित है और सिलाई करके परिवार का पेट पालती हैं। इतनी विकट स्थिति होते हुए भी सिनी ने हार नहीं मानी। 1.5 साल तक स्विमिंग प्रैक्टिस की। आखिरकार मेहनत रंग लाई। केरल की राज्य स्तरीय पैरा तैराकी में 2 बार गोल्ड मैडल जीता। इस जीत ने उसका हौसला इतना अधिक बढ़ा दिया कि वह अब एशियन गेम्स में गोल्ड जितना चाहती हैं। नारायण सेवा संस्थान उनके सपने को पूरा करने के लिए एक मंच प्रदान कर रही है ताकि वह एशियाई खेल में मेडल जीतकर सबके लिए एक प्रेरणास्रोत बन सके।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह

दिनांक : 03 अप्रैल, 2022

स्थान

राजपुरोहित समाज ट्रस्ट, खेतेश्वर भवन, 112 आमन कोईल स्ट्रीट, चेन्नई 79, प्रातः 10 बजे

श्री मैढ क्षत्रिय सभा "सभा भवन", 7/1/1, डॉ. राम मनोहर लोहया, सरणी, कलकत्ता, सायं 4 बजे

होटल शांति एण्ड मेरिज पैलेस, मेन मार्केट, धर्मशाला रोड़ , कांगड़ा, हि.प्र., प्रातः 11 बजे

इसस्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पुलिसकर्मी को लगा कृत्रिम पैर

मध्यप्रदेश के रतलाम निवासी 56 वर्षीय सहायक सब इंस्पेक्टर घटश्याम बियावट का 7 जून 2017 को सड़क दुर्घटना में मोटर साईकिल से गिरकर दाया पैर क्षतिग्रस्त हो गया। आस–पास के लोगों ने उसे रतलाम पहुंचाया, जहां पांव का लेगामेन्ट सही करने के लिए ऑपरेशन कर प्लास्टर चढ़ा दिया गया। महीनों तक इलाज चलता रहा ना तो दर्द से राहत मिली न हड्डी जुड़ी। तब थक–हार परिवार वाले इंदौर के एक नामी हॉस्पीटल ले गए। वहां की चिकित्सा करने वाली डॉक्टर्स टीम ने पैर की नाजुक हालात देखकर कहा कि पांव के जख्म में पस रूक नहीं रहा है। इन्हे गेंगरीन हो गया है। पांव काटना होगा। दिनांक 16 मार्च 2018 को घुटने के नीचे से दांया पांव काट दिया गया। देश समाज की सेवा में 24 घंटे तत्पर रहने वाले पुलिस कर्मी की जिन्दगी सहारे की मोहताज हो गई। एक पैर से ड्यूटी निभाना भी तकलीफ देह हो गया। कुछ दिन पूर्व एक व्यक्ति से उनका मिलना हुआ, उसने कहा कि मैंने उदयपुर नारायण सेवा संस्थान से कृत्रिम पैर लगवाया मुझे बहुत राहत मिली है। यह सुनते ही एएसआई घनश्याम में भी उम्मीद जगी और वे उदयपुर आ गए। संस्थान के डॉ. मानस रंजन साहू ने मेजरमेन्ठ लेकर मोड्युलर लिम्ब तैयार कर घनश्याम को पहनाया। उन्हें चलने की ट्रेनिंग दी गई। अब वे धीरे–धीरे बिन सहारे चलने लगे हैं। हल्का और किस्म का कृत्रिम पैर पाकर एएसआई घनश्याम व परिजन बेहद खुश हैं।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

अपन तो जब भी सत्संग में बैठेंगे। घर गृहस्थी की बात करनी। अपने को इन चीजों को प्रयोग कैसे करना ? व्ययहार में कैसे लाना ? कहते हैं व्ययहार सुधर गया तो रंग चोखा आया, और जीवन का आधार सुधर गया तो, तो तूं सोना बन गया– भाई। ऐसे बाद में रामचरितमानस के अरण्य काण्ड में एक प्रश्न, एक पापीणी का आता है, पापीणी, छलनी बदमाश छल कपट वाली आज भी कोई भी अपनी बेटी का नाम सूर्पणखां नहीं रखे। सूर्पणखा सुन्दर रुप धारण करके राम भगवान के पास आती है, मैं संसार की सबसे सुन्दर नारी, आप भी बहुत सलोने हो, मेरा मन आप पर आ गया है। आप मेरा वरण कर लीजिए। मुझे आपकी पटरानी बना लीजिए। सूर्पणखा ने जब ऐसा कहा तो राम भगवान ने मन में सोचा ये पापीणी इसका भाई रावण है। इसका भतीजा मेघनाद है, इसका एक भाई कुम्भकर्ण है, इसके कजीन भ्राता खर–दूषण, तीसरा मारीच आदि राक्षस है। इनका वध करने के लिए मै आया हूँ। मन में सोचा कि मैंने प्रतिज्ञा की थी कि निशिचरहीन करुहुं मही भुज उठाय प्रण कीन्ह। राम भगवान मन में मुस्कुराये। ऐसे दुर्गुण वाली नारियाँ और दुर्गुण वाले नर दुश्ट हैं। हम कहते हैं नर और नारी एक समान इसलिए कहते हैं कि दोनों के गुणों की पूजा हो। दुर्गुण तो दूर होने चाहिए। राम भगवान ने मुस्कुरा करके लक्ष्मण की तरफ संकेत किया। वो लक्ष्मण जी के पास चली गयी देखो इधर गयी उधर गयी उधर छोड़ा। लक्ष्मण जी के पास गयी लक्ष्मण जी थोड़ा मुस्कुराये बोले भाई मैं तो पराधीन हूँ। मेरे बड़े भाई तो राम भगवान हैं। राम भगवान समर्थ हैं। राम भगवान के पास वापस भेज दिया। और वो तो अपने असली रुप में आ गयी। एक वो भयंकर राक्षसी बन गयी। सीता को खा जाऊंगी। राम भगवान ने संकेत किया और लक्ष्मण जी ने नाक कान काट दिये– उसके। और चिल्लाते हुए खर–दूशण के पास गयी। मेरे इंसान जी के पौत्र का अपहरण करने का पाप किया। जब इंसान जी माता जी के दर्शन के लिए मन्दिर में गये थे। उनको विशैला प्रसाद खिला दिया। प्रसाद में नशा मिलाकर के जीमा दिया, और उनके पौत्र शांतिलाल का अपहरण कर लिया। ऐसे कुलदागी जैसे दुश्टों की कोई जरुरत नहीं है– बाबू।

बीदर (कर्नाटक), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत् कर रहा है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 6 फरवरी 2022 को पन्नालाल हिरालाल शिशण संस्था में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्री भगवत जी खुबा माननीय मंत्री भारत सरकार रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 37, कृत्रिम अंग वितरण 24, कैलिपर माप वितरण 09, बचे हुए कृत्रिम अंग 03, बचे हुए केलीपर 02 की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् राजकुमार जी अग्रवाल (अध्यक्ष अग्रवाल समाज), अध्यक्षता श्रीमान् नागराज जी करपुर (इंजीनियर), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् अमर जी हिरेमत (सहायक केन्द्रीय मंत्री), श्री ब्रिजकिशोर जी मालाली (मंत्री, संस्था), श्रीमान् पुनीत जी बलवीर (गुरुद्वारा समिति सदस्य) रहे। शिविर टीम में श्री हरिप्रदसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी (सहायक), श्री किशन जी सुथार पटेल (टेक्नीशियन) ने भी सेवायें दी।

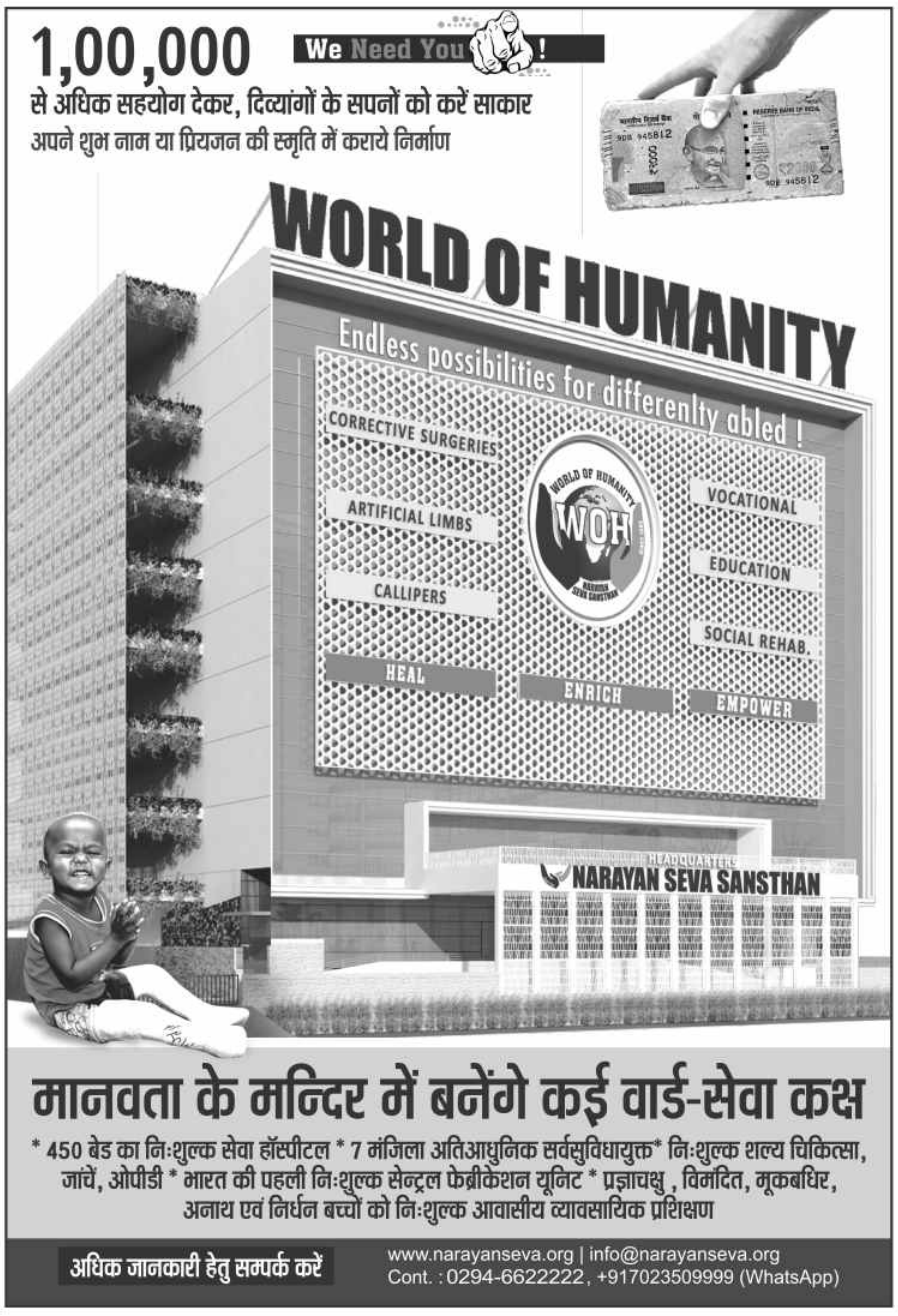

सम्पादकीय

कहा है दया धर्म का मूल है। धर्म यानी धारण करने योग्य सद्वृत्ति दया याने करुणा का भावानुवाद। मानव में करुणा का भाव स्थायी है। वह अनुभाव, विभाव से संचरित होकर दया के रूप में प्रकट होता है। यदि हमारी करुणा–धारा सदा प्रवाहमयी है तो फिर दया का दरिया बनते देर ही क्या लगेगी? जब दया का प्राकट्य निरंतर होगा तो धार्मिकता तो उसका उपजात है ही। इसी धर्म के लिए मनुष्य को संत, हर दार्शनिक और हर उपदेशक, मार्गदर्शक चेताता रहा है। आज चेतना को चैतन्य करके, अनुभव के साथ संयोजित करके, व्यावहारिकता में उतारने की परम आवश्यकता है।

धर्म की धारणा के अनेक बीज हैं उनमें दया भी प्रमुख है। दया के भाव उपजते ही करुणा धारा उत्पन्न होकर बहने लगती है। इस करुणाधारा से ईश्वरीय कार्य सधने लगते हैं। यही धर्म का आचरण होकर संसार को सुखी करने का उपक्रम बन जाता है।

कुछ काव्यमय

आदिकाल से चल रहे, सेवा भरे प्रयास।
सेवा से पहचान है, सेवा ही है सांस।।
चिर परिचित है कल्पना, सेवा–सच्ची राह।
सेवा से ही चल रहा, सुन्दर धर्म–प्रवाह।।
सेवा भी है साधना, कहते वेद–पुराण।
सेवक प्रभु का लाड़ला, मिलते कई प्रमाण।।
जो सेवा की राह पर, चले करे संतोष।
खुद–ब–खुद मिट जायेंगे, उसके सारे दोश।।
सेवा की पतवार है, लहरों भरा उछाव।
भवसागर से तार दे, ऐसी निर्मल नाव।।

अंधेरी गली के मोड़ का दीपक

मानव जीवन ईश्वर का श्रेष्ठ वरदान है। इसे सत्कर्म करते हुए जीना ही लक्ष्य होना चाहिए। यह जीवन मात्र भोग के लिए नहीं है। भोग तो जीवन–मृत्यु के चक्र में फंसाकर इस बहुमूल्य जीवन को व्यर्थ ही कर देगा। इसलिए संसार के बंधन से मुक्त होने के लिए परमपिता परमात्मा की कृपा पाने का उपक्रम करना चाहिए। इसके लिए चिंतन, मनन और भजन आवश्यक है। जीना एक कला भी है और तपस्या भी। जीना वही सार्थक है जो अपने साथ दूसरों के जीवन में भी रस भर दे। हम आनंद की खोज करें। जहाँ आनन्द मिलता हे, उस स्थान का तलाशें और वीतरागता और उपशम का ऐसा वातावरण बनाएँ जहाँ सिर्फ आनंद का स्फुरण हो रहा हो। यही स्थिति ही हमें अध्यात्म के विकास की ओर प्रेरित कर सकती है। मोह और अज्ञान का जब विलय हो जाता है तो आनन्द की अनुभूति होती है। एक धनाढ्य व्यक्ति प्रतिदिन मंदिर जाता। देव–प्रतिमा के समक्ष घी का दीपक जलाता और प्रभु से अपनी सुख–समृद्धि के लिए विनती करता। वह वर्षों से मंदिर में दीया जलाता आ रहा था। उसी गाँव का एक गरीब भी संध्या ढले इस मंदिर में तेल का दीपक जलाया करता और प्राणीमात्र के कल्याण की प्रार्थना करता। बाद में वह उस दीपक को उठाकर अपने घर के सामने वाली अंधेरी गली के मोड़ पर रख आता। दीपक के सहारे उजाले में लोग बिना ठोकर

खाएं गली को सहजता से पार कर लेते। दैवयोग से मंदिर में दीपक जलाने वाले सेठ और गरीब का एक ही दिन निधन हो गया। धर्मराज ने सेठ से ज्यादा निर्धन के पुण्य गिनाते हुए उसे स्वर्ग में अच्छा स्थान देने का पार्षदों को आदेश दिया। धनाढ्य यह सुनकर भौचक्का रह गया। वह बोला यह तो सरासर अन्याय और भेदभाव है। मैं प्रतिदिन घी का दीपक प्रभु को अर्पण करता था और यह कंगला तेल का दीया जलाता था यह भला मुझसे अधिक पुण्यात्मा कैसे हो सकता है? धर्मराज मुस्कराएं।

बोले–तुम अपनी सुख–सुविधा और धन–धान्य की वृद्धि के लिए दीपक जलाते थे, जबकि यह गरीब सभी का हित साधने और आते–जाते लोगों को राह दिखाने के लिए अंधेरी गली में दीपक जलाकर रखता था। कर्मों का आकलन इस बात से किया जाता है कि वह कार्य किस प्रयोजन से किया जा रहा है। दूसरों की भलाई के लिए किए गए किसी भी कार्य का पुण्य स्वभावतः अधिक होता है। बंधुओं, मनुष्य जीवन का लक्ष्य है –प्रभु की कृपा का पात्र बनकर जनम–मरण के चक्र से मुक्ति पाना। इसके लिए वैराग्य का आश्रय लेना ही जरूरी नही है। गृहस्थ रहते हुए भी भक्ति के बाधक तत्त्वों का परित्याग किया जा सकता है।

निषिद्ध कर्म यथा–छल, प्रपंच, असत्य, हिंसा, चोरी एवं काम्य कर्मों को त्यागने के साथ ही मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा, धन–सम्पत्ति, वैभव, कुटुम्ब आदि अनितय पदार्थों के प्रति तृष्णा का परित्याग भी जरूरी है। लौकिक पदार्थों के प्रति ममता और आसक्ति के स्थान पर प्रभु से अनन्य प्रीति और अनुराग के भाव मन में जागृत होने चाहिए और यह तभी सभी संभव है जब हमारा मन निर्मल हो। निर्मल मन से ही सत्कर्म प्रेरित होते हैं, जो प्रभु की शरण में ले जाने में सहायक होते हैं। मंदिर की ड्योढ़ी पर जले दीपक से अंधेरी गली के मोड़ पर जगमगाते दीपक का महत्त्व क्यों अधिक है, यह अब आप समझ ही गए होंगे? ईश्वर ने हमें जिस स्वरूप में बनाया, उसी में संतुष्ट रहकर अपने कर्मों पर ध्यान दें। अच्छे कर्म का फल सदैव मीठा ही होता है। श्रीमद् भागवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण के अर्जुन को दिए उस संदेश को भी याद रखे कि कर्म करो, फल की अभिलाषा मत करो। इसे भगवान पर छोड़ दो, अर्थात् वही तुम्हारे कर्मों का आकलन कर फल भी निर्धारित करेगा।

–कैलाश 'मानव'

प्रशंसा का जादू

प्रशंसा का कोई मोल नहीं होता, प्रशंसा करने से कुछ नहीं जाता मगर पाने वाले को अपना बना देती है।

हमारे भीतर अगर धन्यवाद का भाव आ जाए तो जीवन सुखमय हो जाएगा। हर अच्छाई की प्रशंसा करके लोगों के दिलों को जीता जा सकता है। एक परिवार में पति–पत्नी और बच्चा बड़े प्यार से रहते थे। पति और पत्नी दोनों जॉब करते थे। गृहस्थी आराम

से चल रही थी। एक दिन की बात है कि पत्नी थकी–मांदी ऑफिस से लौटी, उसने जैसे–तैसे भोजन बनाया और रख दिया। देर शाम पति घर लौटा। उसने उस भोजन को प्रेम से खा लिया, परन्तु उसे बेटे को भोजन नहीं भाया। बेटे ने रात को सोते समय पिता से पूछा पापा! आज भोजन कच्चा था, फिर भी आपने खा लिया। मम्मी को कुछ नहीं बोला। तब पिता ने प्यार से बेटे के सिरपर हाथ फिराते हुए कहा–आपी मम्मी रोजाना अच्छा भोजन बनाती है, आज उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। इसीलिए अच्छा भोजन नहीं बना पाई, कोई बात नहीं। मैंने कुछ नहीं कहकर घर में अशांति को रोक लिया। बेटा पिता से एक अच्छी बात सीख गया। लेकिन दूसरी कहानी में एक पत्नी ने पति की थाली में घास–फूस, कंकर–पत्थर ढककर परोस दिया। पति ने भोजन के लिए ऊपर की थाली हटाई तो घास–फूस देखकर आग–बबूला हो गया और जोर–जोर से कहने लगा कि मुझे तुमने जानवर समझा है क्या?

पत्नी पलटकर जवाब देती है– पतिदेव! आज शादी को 5 वर्ष हो गए, मैंने अच्छे–अच्छे व्यंजन बनाकर आपको परोसे, परन्तु आपने भी अच्छा या बुरा, कुछ भी नहीं कहा। मुझे लगा कि आप जानवर ही हैं जो अच्छे को अच्छा कहना नहीं जानते। यह सुनकर पति ने सीख ली कि मुझे उसे अच्छाई भी बताना चाहिए थी, ताकि वह हमेशा खुश रहती।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

अस्पताल में सभी घायलों की देखभाल शुरू हो चुकी थी, कैलाश का अब यहां कोई काम नहीं था, पोस्ट ओफिस से वह अचानक ही उठकर पिण्डवाड़ा चला गया था, अब वापस उसने काम पर लौटने की सोची। पोस्ट ओफिस सामने ही था, सभी लोग भंवर सिंह के बारे में जानने को आतुर थे। कैलाश ने विस्तार से उन्हें सारी बात बताई, अहमदाबाद के सेठ और उसके जमाइयों का किस्सा भी बताया तो सब उन्हें धिक्कारने लगे। इसी बीच कैलाश के साथी ने पूछ लिया कि खून नहीं मिलेगा तो उस सेठ का क्या होगा। यह प्रश्न सुनते ही कैलाश को अपनी गलती का अहसास होने लगा, वह अपने आपको कोसने लगा कि क्यूं नहीं उसने उन जमाइयों पर खून देने के लिये दबाव डाला। यह विचार मन में आते ही वह अपनी कुर्सी से उठा और अपने साथी को कोई जवाब दिये बिना अस्पताल की तरफ बढ़ गया।

अस्पताल के बाहर ही जमाइयों की कार निकलती हुई नजर आ गई। दोनों अपनी पत्नियों के साथ वापस निकल रहे थे। कैलाश ने इन्हें रोका और पूछा कि खून दे दिया क्या। दोनों ने इन्कार कर दिया तो कैलाश को गुस्सा आ गया और बोल पड़ा कि अपने पिता को मरते हुए छोड़ कहां जा रहे हो। कैलाश की बात सुनकर सब हक्के बक्के रह गये। एक जमाई ने कहा कि नहीं ऐसी बात नहीं है, हमने डाक्टर को कह दिया है कि वह खून खरीद ले और पिताजी के चढ़ा दे। यह सुन कर कैलाश का क्रोध और बढ़ गया, उसने कहा यहां पैसों से खून देने वाला कोई नहीं, वैसे भी तुम लोगों की रगों में भी खून कहां है, खून की जगह तो गन्दी नाली का पानी भरा हुआ है, ऐसा खून चढ़ाते तो भी वो मरते इससे अच्छा तो यह है कि बिना खून के ही मर जायें।

अंश - 047

हरेक जीव उपयोगी

बहुत समय पहले की बात है, एक राजा था। एक दिन उसने सोचा, क्यों ने ऐसे जीव–जंतुओं की खोज की जाए जिनकी इस संसार में कोई उपयोगिता ही न हो। उसने अपने दरबारियों से इस बारे में विचार–विमर्श किया।

उसने सभी दरबारियों और सैनिकों को इस काम में लगा दिया। बहुत दिनों तक खोजने के बाद पता चला कि संसार में जंगली मक्खी और मकड़ी बिल्कुल बेकार हैं। उसने उन्हें खत्म करने का आदेश दिया।

कुछ दिनों बाद राजा के राज्य पर किसी अन्य राजा ने आक्रमण कर दिया। राजा अपनी जान बचाकर वहां से भाग निकला। वह थककर एक जंगल में पेड़ के नीचे सो गया। तभी जंगली मक्खी ने उसको काटा तो, राजा की नींद खुल गई।

उसे लगा खुले में सोने से शत्रु उसको मार देंगे तब वह एक गुफा में जाकर सो गया। राजा जैसे ही गुफा में गया, वैसे ही मकडियों के एक झुंड ने गुफा का मुंह जाले से बंद कर दिया। शत्रु के सैनिक राजा को खोजते वहां आए लेकिन गुफा में मकड़ी का जाला देखकर सोचा कि शायद यहां कोई नहीं हैं, यदि होता तो यह जाला टूटा हुआ होता। और वो चले गए। राजा गुफा के अंदर से यह बात सुन रहा था। तब उसे जंगली मक्खी और मकड़ी की उपयोगिता के बारे में पता चला। इस तरह उस राजा ने फिर कभी भी इस तरह की अजीब घोषणाएं नहीं कीं। इस जीव जगत में जो भी जन्मा है। उसकी कुछ न कुछ उपयोगिता है। इसलिए हम ये सोच लें कि अमुक जीव किसी काम का नहीं तो यह हमारी सबसे बड़ी गलती होगी।

पोषक तत्व से भरपूर - टमाटर

रोज एक–दो टमाटर खाने से डॉक्टर की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। आजकल पुरी दुनिया में टमाटर का उपयोग भारी मात्रा में होता है। आलू और शकरकंद के बाद, समग्र विश्व में, उत्पादन की दृष्टि से टमाटर का क्रम आता है। टमाटर में आहारोपयोगी पोषक तत्त्व काफी मात्रा में होने के कारण ये हरी साग–भाजियों में एक फल के रूप में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। टमाटर भारत में सर्वत्र होते हैं। ये बलुई से लेकर सभी प्रकार की जमीन में होते हैं। परंतु इसे कठोर, क्षार या रेतवाली जमीन अनुकूल नहीं पड़ती। टमाटर सख्त ठंडी को सहन नहीं कर सकते। भारी वर्षावाली और ठंडी ऋतु को छोड़ किसी भी ऋतु में इसके बीजों की पनीरी बनाकर इसे उगाया जा सकता है। सामान्यतः वर्ष में दो बार, वर्षा ऋतु में और शीतकाल में (मई–जून तथा अक्तूबर– नवम्बर मास में) टमाटर बोये जाते हैं। यद्यपि बाजार में तो ये वर्षभर मिलते हैं। टमाटर के पौधे दो से चार फुट ऊँचे बढ़ते हैं। शाखाओं पर अंतर से पर्ण लगते हैं। इसके पत्ते बैंगन के पत्तों की अपेक्षा छोटे होते हैं। टमाटर के बीज बैंगन या मिर्च के बीज से मिलते–जुलते होते हैं। इसके पौधे हल्के धुँधले रंग के दीखते हैं। उनमें से कुछ उग्र और खराब बदबू आती है। टमाटर की कई किस्में होती हैं। इनकी आकृति, रंग और स्वाद भिन्न–भिन्न होते हैं। टमाटर जितने बड़े हों उतने ही गुण में उत्तम होते हैं। कच्चे टमाटर हरे रंग के, खट्टे और पचने में हल्के होते हैं, परंतु जब ये पकने लगते हैं तब चमकते–तेजस्वी लाल रंग के होते हैं। आलू या शकरकंद की सब्जी में टमाटर डालकर बनाई हुई मिश्र तरकारी स्वादिष्ट होती है। गुड़ या शक्कर डालकर बनाया हुआ टमाटर की सब्जी खटमीठी, अत्यंत स्वादिष्ट, रुचिकर और पाचक होती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

पुणे (महाराष्ट्र), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत् कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 14 फरवरी 2022 को अंकुश राव लांगडे नाट्य सभागृह भोंसरी रोटरी में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता क्लब डायनोमिक भोंसरी राजगुरुनगर रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 42, कृत्रिम अंग वितरण 27, कैलिपर माप वितरण 10 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् महेश दादा लांगडे (विधायक, भोंसरी), अध्यक्षता श्रीमान् प्रशान्त जी देशमुख (माजी प्रांत डिस्ट्रीक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् नितिन जी लांगडे (नगर सेवक, भोंसरी), श्रीमान् अशोक जी पंगारिया (रोटरी क्लब डायनामिक अध्यक्ष, भोंसरी), श्रीमान् अजीत जी वालुंज (अध्यक्ष, रोटरी क्लब ऑफ राजगुरुनगर) रहे।

शिविर टीम में श्री मुकेश जी (शिविर प्रभारी), श्री सुरेन्द्र सिंह जी झाला (आश्रम प्रभारी पुणे), श्री भरत जी भट्ट , श्री देवीलाल जी मीणा, श्री हरीश जी रावत (सहायक), भगवती जी पटेल (टेक्नीशियन) ने भी सेवायें दी।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

अब लगता है पी.जी. जैन साहब कैसे मिले? एक पोस्ट कार्ड आता है, पीएण्डटी कॉलोनी के ग्राउन्ड फ्लोर के किराये के एक कमरे में बैठे थे। उस समय पोस्टमैन साहब एक पोस्ट कार्ड लेकर आते हैं। कैलाश जी, मैं सोजत रोड़ का रहने वाला हूँ, इसके पास एक गाँव है मेरा व्यापार महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के गोरेगाँव में स्थित है, रेलवे से रत्नागिरी से होकर गोवा का बहुत बड़ा प्रोजेक्ट बना रेलवे का।

आज भी इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत रेलवे विभाग एक महान प्रोजेक्ट। रत्नागिरी कितना ऊबड़ खाबड़, कितना पहाड़ी, कितनी सुरंगें? लिखा– उसमें रायगढ़ जिले के गोरेगाँव, जिसकी आबादी तीस–चालीस हजार है, वहाँ रहता हूँ। सोजत रोड़ के स्थानक में परम पूज्य चंपालाल जी पोखरना साहब जो अब भी बहुत आशीर्वाद दे रहे हैं। उनके सुपुत्र आदरणीय मोहन लाल जी पोखरना पूरा जीवन उन्होंने समाज सेवा में लगा दिया। अभी–अभी नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगों के लिये एक शिविर किया था।

मोहन लाल जी के बड़े भ्राता शांतिलाल जी पोखरना साहब अंतरिक्ष से आशीर्वाद दे रहे हैं, बहुत साथ दिया। रत्नागिरी जिले को दापोली और आदरणीय पी.जी. जैन साहब रायगढ़ जिले के गोरगाँव से लिखा। पी.जी. जैन साहब ने लिखा चंपालाल जी पोखरना साहब मेरे साले साहब लगते हैं। उन्होंने ये पत्रिका दी सेवा संदीपन, मैंने पूरी पढ़ी। एक बार नहीं, दो बार पढ़ी। मेरी आँखों में आँसू आ गये, बाबू जी, आप कितना महान कार्य कर रहे हैं?

सेवा ईश्वरीय उपहार– 400 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023